पाठ्य सामग्री

Geography B.A. Part-II (Hon's)

Paper-III

Unit-I

भारत के प्राकृतिक बनावट का वर्णन करें

नं 86

① Physical Structur of India (Rilef)

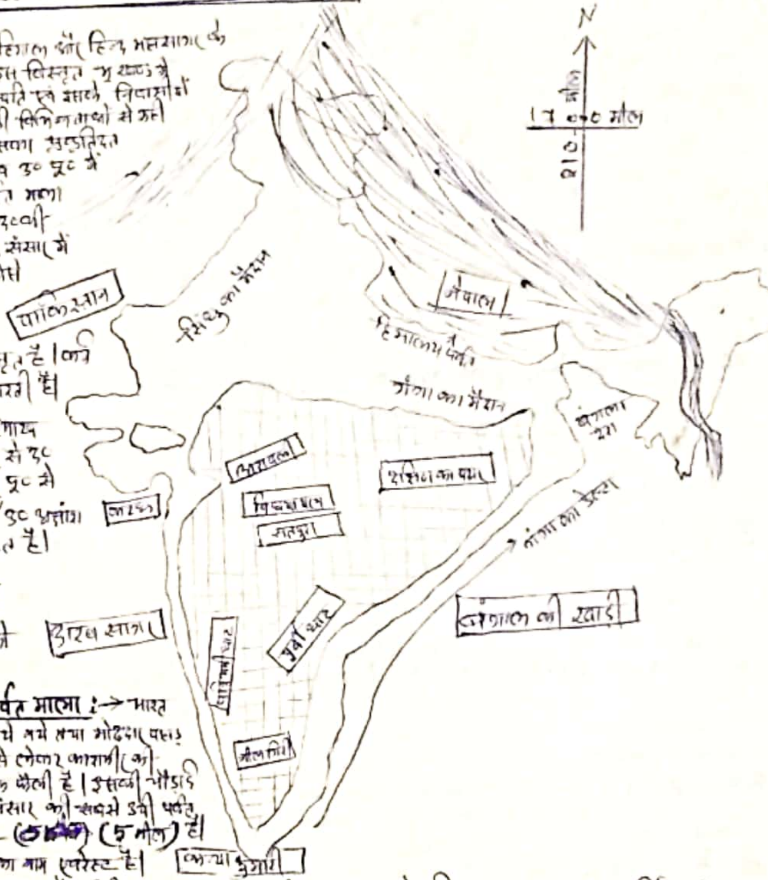

उत्तर में हिमालय से दक्षिण में हिन्द महासागर के बीच भूखण्ड का नाम भारत है। लेकिन इस विस्तृत भूखण्ड के धरातलीय रूप, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति एवं इसके निवासियों में बड़ी विषमता पाई जाती है फिर भी इन्हीं विभिन्नताओं से कहीं अधिक महत्वपूर्ण और प्रभाव शाली इसकी प्राकृतिक भौगोलिक व्यवस्था है। उत्तर पश्चिम एवं उत्तर पूरब में संसार की सबसे ऊंची एवं विस्तृत पर्वत माला इसे शेष एशिया से अलग करती है। इसकी और विशाल जल-राशि फैली हुई है। संसार में शायद ही कोई इतना बड़ा भूभाग है, जिसे प्रकृति ने इस प्रकार की एक विशिष्ट भौगोलिक इकाई का रूप दिया हो। सम्पूर्ण भारत विषुवत रेखा के उत्तर विस्तृत है। कर्क रेखा भारत के बीचो-बीच होकर गुजरती है।

भारत का क्षेत्रफल 32 लाख 80 हजार वर्ग किलो मीटर है। उत्तर से दक्षिण की लम्बाई लगभग 2100 मील और पूरब से पश्चिम 1700 मील है। भारत 6°45' उ० अक्षांश से 37°6' उ० अक्षांश के बीच विस्तृत है।

भारत के प्राकृतिक विभाग

भारत के प्राकृतिक विभाग को चार भागों में बांटा गया है।→

1. उत्तर पर्वत माला या हिमालय पर्वत माला :→ भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत माला है ये नये तथा मोड़दार पहाड़ है। यह पर्वत श्रेणी असम की पूर्वी सीमा से लेकर कश्मीर की पश्चिमी सीमा तक लगभग 1500 मील तक फैली है। इसकी चौड़ाई लगभग 150 से 200 मील तक है। यह संसार की सबसे ऊंची पर्वत माला है, जिसकी ऊंचाई 29,028 फीट (5 मील) है। यह नेपाल में स्थित है। जिसकी चोटी का नाम एवरेस्ट है। अन्य मुख्य चोटियां कंचन जंघा- 27 815, धौलागिरी 26,795, नंगा पर्वत 26,620, गोसाईनाथ 26,291 फीट आदि है। हिमालय पर 16000 फुट के ऊपर का भाग बराबर हिमाच्छादित रहता है इसी लिए इसका नाम हिम अथवा हिमालय (हिम का घर) कहा जाता है।

हिमालय के समानान्तर तीन श्रेणीयां पड़ती है।

(1) The great or Inner Himalayas (वृहत अथवा अभ्यान्तरिक हिमालय या सर्वोच्च हिमालय) :→ यह पर्वत श्रेणी सबसे ऊंची है। इसकी औसत ऊंचाई 20000 फुट से अधिक है और सभी प्रधान ऊंची चोटियां इसमें मिलती है।

(2) The lesser or Middle Himalayas (लघु अथवा मध्य हिमालय) :→ हिमालय प्रदेश में ज्यों-ज्यों उत्तर से दक्षिण की ओर आते हैं, पहाड़ों की ऊंचाई घटती जाती है। सर्वोच्च हिमालय के दक्षिण में स्थित लघु हिमालय की ऊंचाई 15,000 फुट के निकट है। इसकी श्रेणीयों की चौड़ाई करीब 25 मील है।

(3) The Outer Himalayas (बाह्य हिमालय) :→ इसकी ऊंचाई 3000 फुट से लेकर 4,000 फुट तक है। यह तराई हिमालय और मध्य हिमालय के बीच है। इसे हिमालय पर्वत माला का पाद प्रदेश (Foot Hills) कहते हैं। लघु हिमालय और बाह्य हिमालय के बीच कई छोटी-छोटी घाटियां मिलती है जिसे दून (Doon) कहते है। इस प्रदेश में देहरादून ऐसी ही घाटी में बसा है। वृहद और मध्य हिमालय के बीच अनेक उपजाऊ घाटियां मिलती हैं और इससे होकर झेलम और बागमती नदि बहती है। भारत के प्रसिद्ध शैलावास, शिमला, मंसूरी, नैनीताल, दार्जिलिंग, मध्य हिमालय के निचले भाग में स्थित है। पूर्व में भारत और बर्मा के बीच जो पहाड़ों को विभिन्न स्थानों में विभिन्न नामों से पुकारते है उसमें यह पटकोई की पहाड़ी, इसके नागा पहाड़ी, मनीपुर पहाड़ी तथा लुशाई की पहाड़ीयां है।

दर्रे :→ हिमालय पहाड़ में जो आने जाने का रास्ता है उसे दर्रे कहते हैं। इन दर्रों का बहुत महत्व है। उत्तर पश्चिम में खैबर के तथा बोलन दर्रे है जो अब पाकिस्तान में है। उत्तर में ~~[illegible]~~ रावलपिंडी से कश्मीर जाने का रास्ता है, जो अब पाकिस्तान के अधिकार में है। श्रीनगर से जोजीला दर्रे द्वारा लेह तक जाने का रास्ता है। पंजाब से तिब्बत जाने के लिए शिपकी दर्रा है, जो शिमला के पास है।

हिमालय का भारतीय जीवन पर प्रभाव :→

(i) हिमालय भारत की सुरक्षा की ख्याल से बहुत ही महत्वपूर्ण है, इसलिए उत्तर से भारत पर आक्रमण करना असम्भव है।
(ii) हिमालय मानसूनी हवा को रोककर वर्षा करती है
(iii) हिमालय से भारत की कई नदियां निकलती है, जो नदियों से ही उत्तर भारत की भूमि बनी है। नदियों में सालो भर पानी रहने के कारण भूमि उपजाऊ है।
(iv) हिमालय जल प्रपात, जल शक्ति का एक विशाल भंडार है।
(v) मध्य हिमालय में अच्छी मुलायम लकड़ी के विशाल भंडार है।
(vi) हिमालय की ढाल पर चाय की खेती बागान है, तथा घाटियों में फल, चावल, आलू इत्यादि की खेती होती है
(vii) हिमालय के निचले भागो में अनेक सुंदर तथा स्वास्थ्यप्रद शैलावास है, जहां लोग जलवायु को बदलने के लिए गर्मी में आते है। इनमें शिमला, नैनीताल, मंसूरी, दार्जिलिंग आदि उल्लेखनीय है। (viii) एक अर्थ में भारत [illegible] हिमालय की देन है।

Scanned with CamScanner

2. उत्तर भारत का मैदान :→ हिमालय पर्वत माला के दक्षिण एक विस्तृत समतल मैदान है, जो उत्तर भारत में फैला हुआ है। यह गंगा, ब्रह्मपुत्र तथा सिंधु और इनकी सहायक नदियों द्वारा [illegible] है। इसी लिए इस मैदान को गंगा सिंधु का मैदान पुकारा जाता है। इसका अधिकांश भाग गंगा नदी के क्षेत्र में पड़ता है। [illegible] और इसकी सहायक नदियों के मैदान का अधिकांश भाग अब पश्चिमी पाकिस्तान में पड़ता है। भारत में सतलज, रावी और व्यास का ही मैदान रह गया है। इसी प्रकार पूर्व में गंगा नदी के डेल्टा का अधिकांश भाग अब पूर्वी पाकिस्तान (बंगला देश) में पड़ता है। यह मैदान पूर्व से पश्चिम भारत के अन्दर 1500 मील लम्बा है। इसकी चौड़ाई 150 से 200 मील तक है। इस मैदान में कोई कहीं पहाड़ नहीं है। भूमि समतल है और समुद्र की सतह से धीरे 2 पश्चिम की ओर उठती गयी है। कहीं भी यह मैदान 900 फीट से अधिक ऊँचे नहीं है। दिल्ली जो गंगा और सिंधु के मैदान के बीच उच्च भूमि पर स्थित है, जिसकी ऊँचाई 700 फीट है। इस मैदान की मिट्टी 1000 मीटर (हजारों फीट) गहरी है और एक छोर से दूसरे छोर की मिट्टी एक जैसी ही बहुत उपजाऊ है। हिमालय की तलहटी जहाँ नदियाँ पर्वतीय क्षेत्र को छोड़कर मैदान में प्रवेश करती है उस [illegible] में कंकड़ मिश्रित निक्षेप पाया जाता है, इस क्षेत्र को भाबर कहते हैं। भाबर के द० में तराई प्रदेश है जहाँ विलुप्त नदियाँ प्रकट हो जाती है। यह क्षेत्र दलदलों एवं जंगलों से भरा पड़ा है। इस मैदान के अधिक भाग में छोटी मोटी पहाड़ियाँ मिलती है। इसका उदाहरण बिहार में गया और राजगीर की पहाड़ियाँ है।

आर्थिक महत्व :→ आर्थिक दृष्टि से देश का यह सबसे महत्वपूर्ण भाग है। प्राचीन काल से यह आर्य सभ्यता का केन्द्र रहा है। यह भारत का सबसे अधिक उपजाऊ तथा सिंचाईयित क्षेत्र है। यहाँ कृषि के अतिरिक्त अनेक उद्योग-धन्धों का विकास हुआ है एवं नगरों की बहुलता है एवं यातायात के साधन उन्नत है। यह भारत का सबसे घना आबाद क्षेत्र है और यहीं भारत का लगभग दो तिहाई आबादी बसा है।

3. द० का पठार या डेक्कन का पठार या प्रायद्वीप भारत :→ द० भारत का पठार विश्व का बहुत प्राचीन स्थल भाग है। गंगा नदी से पुराना इस भाग की ऊँचाई करीब 1500-4000 फुट है। यह कड़ी रवेदार चट्टानों से बनी है, जो रूपान्तरित है। यह ऊँचाई दक्षिण की तरफ अधिक है; इसे डेक्कन का पठार भी कहते हैं। यह पठार त्रिभुजाकार है। इसके तीनों ओर पहाड़ी क्रम चली गई है। उ० में विन्ध्याचल और सतपुड़ा पहाड़ साथ-2 चले गये हैं। इस पहाड़ी क्रम के कारण उ० भारत और द० भारत एक दूसरे से अलग हो गये हैं। प० में पश्चिमी घाट के पहाड़ एवं पू० में पूर्वी घाट के पहाड़ हैं। पश्चिमी घाट पहाड़, समुद्र तट के निकट लगातार दिवार की भाँति उ० से द० की ओर फैले हुए हैं जिसमें थाल घाट, भोर घाट और पालघाट नाम के तीन प्रसिद्ध दर्रे हैं। इन्हीं मार्गों से होकर बम्बई से क्रमशः कलकत्ता और मद्रास के रेल मार्ग गये हैं। पूर्वी घाट जगह 2 पर कटे फटे हैं। इसकी ऊँचाई पश्चिमी घाट की अपेक्षा कम है; ये उ०पू० में छोटानागपुर पठार से होकर द० में नीलगिरि पर्वत तक फैले हुए हैं। नीलगिरि की सबसे ऊँची चोटी डोडा बेटा 8760 फुट ऊँचा है।

इस पठार की उ० सीमा अरावली पर्वत तक फैली है, जो हिमालय से भी अधिक पुराना है। अरावली, मैकाल, कैमूर, महादेव, अजन्ता, विन्ध्य तथा सतपुड़ा आदि पहाड़ियाँ छोटानागपुर पठार का दक्षिण का ही अंग है। द० पठार अत्यन्त पुरानी, कड़ी और रवेदार परिवर्तित चट्टानों से निर्मित है। धरातल के मूल में ग्रेनाइट और नाइस की चट्टानें है। द० भाग में स्लेट और [illegible] की चट्टानें मिलती है। इसी भाग में लाल मिट्टी, चूना पत्थर, कोयला प्रधान चट्टाने मिलती है।

द० पठार में कई नदियाँ बहती हैं, जिसमें गोदावरी, महानदी, कृष्णा कावेरी और वैगाई प्रमुख हैं ये सब बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। ये सभी बरसाती नदियाँ हैं। पश्चिम की ओर बहने वाली नदियों में नर्मदा और ताप्ती प्रधान है। उत्तर की ओर बहने वाली नदियाँ चम्बल, बेतवा और सोन है। पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ दामोदर और स्वर्ण रेखा है।

आर्थिक महत्व :→ दक्षिण भारत का पठार आर्थिक महत्व बहुत रखता है। यहाँ विशाल खनिज भंडार मिलते हैं। उ०पू० भाग के रानीगंज और झरिया में भारत प्रसिद्ध कोयले की खानें हैं। कर्नाटक में सोना, म० प्रदेश में हीरा, मैंगनीज, बिहार में अबरख, ताम्बा, गंधक, कोयला, उड़ीसा, बिहार एवं कर्नाटक में लोहा तथा अन्य खनिज मिलते हैं। द० पठार की काली मिट्टी कपास की खेती के लिए मशहूर है। पहाड़ों की ढाल पर चाय और कहवा की खेती होती है। पठार पर सखुआ, शीशम, चन्दन, इत्यादि बहुमूल्य जंगल मिलते हैं। जंगल में लाह और बहुमूल्य पदार्थ मिलते हैं। इसी भाग में चम्बल घाटी है, जिसमें [illegible] गड्ढे एवं जंगल के चलते डाकुओं का अड्डा बना हुआ है। इस भाग में यातायात का समुचित विकास नहीं होने के कारण लोगों के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर काफी प्रभाव पड़ा है। यही कारण है कि इस भाग में जनसंख्या भी कम मिलती है।

4. तटीय मैदान :→ द० भारत के पश्चिम तथा पूर्वी किनारे पर तटीय मैदान स्थित है। द० पठार के पू० तथा प० में समुद्र तक दो सँकरे मैदान मिलते हैं; जिन्हें क्रमशः पूर्वीतट का मैदान एवं पश्चिमी तट का मैदान कहते हैं; इन्हें समुद्र एवं नदियों ने मिलकर बनाया है।

(I) **पश्चिमी तट :→** यह मैदान अरब सागर और प० घाट के बीच स्थित है, जिसका मध्य भाग अधिक सँकरा है। उ० में नर्मदा ताप्ती के मुहाने के पास अधिकतम चौड़ाई 80 K.m मिलती है। यह मैदान उत्तर में कच्छ से लेकर दक्षिण द० में कन्या कुमारी तक विस्तृत है। इसके कटे फटे भागों में प्राकृतिक पोताश्रय मिलते हैं। पश्चिमी तटों पर झीलों की संख्या अधिक मिलती है। ये झील आपस में मिले हुए हैं, जो सैकड़ों किलोमीटर लम्बा जल मार्ग बनाते हैं।

(II) **पूर्वीतट मैदान :→** पूर्वी तटीय मैदान उत्तर में गंगा के डेल्टा से मिला हुआ है। इस मैदान में महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी के उपजाऊ डेल्टा भाग मिलते हैं। तटों पर बालू जमा होने से पुलीकट, चिलका आदि झीलों का निर्माण हुआ है। अधिक कटा फटा नहीं होने के कारण पूर्वी भाग पर प्राकृतिक पोताश्रय नहीं है।

आर्थिक महत्व :→ पूर्वी तट पर धान आदि की अच्छी खेती होती है, नारियल के पेड़ दोनों तटों पर मिलते हैं जिससे अनेक उद्योग व धन्धे चलते हैं। पश्चिमी तट पर केरल में मोनाजाइट नामक खनिज मिलता है, पेट्रोल की खोज चल रही है यह मिला भी है। तटों पर समुद्री जल से नमक तैयार किया जाता है। यहाँ व्यापारिक केन्द्र विशाखापतनम, मद्रास, कोचीन, मुरमुगाव, बम्बई इत्यादि पतन है। जहाँ आन्तरिक और विदेशी व्यापार होते हैं। इस भाग में तेल-शोधक, मछली मारना, मोती निकालना, वस्त्र उद्योग, तथा जल पोत निर्माण उद्योग स्थापित हैं।